पद ५

(राग: यमन जिल्हा - ताल: त्रिताल)

करुणाकर ये कृपाळा। धरी करीं मज अंगीकार रे।।ध्रु.।। पातक मजला फारचि घडलें। घातक अंत न पार रे।।१।। प्रीती नसे तुझिया भजना रे।।२।। माणिक म्हणे प्रभु दर्शन देऊनि। करी पातक संहार रे।।३।।